यादे हुसैन किरदार-साज़ी

जनाब सै० रिज़वान हैदर साहब

आज दुनिया एक ऐसी मुसीबत में मुबतिला है, के बज़ाहिर दुनिया तरक्क़ी की राह पर गामज़न है, मगर लोगों के किरदार पस्ती की सिम्त बढ़ रहे हैं। इसकी वजह चाहे हमारी बदकार Leadership हो, चाहे हमारा मौजूदा तालीमी निज़ाम। इस मुसीबत के वक्त में जबकि किरदार पस्त हो रहे हैं इस बात की शदीद ज़रूरत है कि ऐसे लोगों की याद ताज़ा की जाए जो कि किरदार के नुक़्त-ए-उरूज पर हों। जब दुनिया ने तारीख़ को पलटा तो उसे बहुत सी हस्तियाँ दिखीं, कोई शुजाअत का मुकम्मल पैकर था, कोई अहिंसा का पुजारी, कोई सब्र की अज़ीम मन्ज़िलों पर फ़ाएज़ था, कोई तक़वे का मुकम्मल मुजस्समा कोई ईसार की जीती-जागती तस्वीर था, मगर कोई न मिला की जिसमें यह तमाम सिफतें अपने नुक़्त-ए-उरूज पर मौजूद हों।

तारीख़ को खंगाल कर देख लिया तो सिर्फ हुसैन और बस हुसैन की ही ज़ात मिली कि जिसमें किरदार की तमाम सिफ़्तें अपने नुक़्त-ए-उरूज पर थीं और यह तमाम सिफ़्तें एक-एक करके मैदाने करबला में नुमायाँ हुई।

जैसा किरदार होगा वैसी ही नुमाइन्दगी होगी और वैसी ही किरदार साज़ी होगी। किरदार का असर कैसा होता है, यह देखना हो तो अपने ज़हनों को करबला ले चलिए, एक तरफ भूखे-प्यासे 72 थे, तो दूसरी तरफ सैरो-सेराब लाखों। एक तरफ नमाज़ें थीं तो दूसरी तरफ शराबें । एक तरफ मुसल्ले सज रहे थे, तो दूसरी तरफ घोड़ों की ज़ीनें। एक तरफ तकबीरों की आवाज़ थी, तो दूसरी तरफ हथियारों की झंकार। एक तरफ नैज़े पर क़ुरआन पढ़ने वाले थे, तो दूसरी तरफ नैज़े पर क़ुरान रखने वाले। एक तरफ जज़बए शहादत था, तो दूसरी तरफ जागीरों और इनामों की लालच। एक तरफ हक़ पर फ़िदा होने की होड़ थी,दूसरी तरफ यज़ीद के सामने ऊँचा होने की चाह। एक तरफ हुसैनी सब्र था, तो दूसरी तरफ यज़ीदी ज़ुल्म। एक तरफ दुश्मन को भी पानी पिलाने का सबक़ था, तो दूसरी तरफ जंग जीतने के लिए पानी बन्द करने की तदबीर ।एक तरफ उसको माफ करने की हिम्मत थी जो कि घेर कर करबला लाया था, तो दूसरी तरफ छः महीने के बच्चे पर भी तीर चलाने की गुस्ताखी।

यह है नुमाइन्दगी का असर, कि मुखतलिफ़ सिन वाले, मुखतलिफ़ रंग वाले, मुखतलिफ़ नसब वाले, मुख़तलिफ मज़हब वाले एक होकर हुसैनी मिशन के लिए अपना सब कुछ क़ुरबान कर देते हैं।

"हुसैन इब्ने अली ने फ़ितरतें ,बदली हैं एक शब में,
बुझी है शम्में और महफ़िल से परवाने नहीं जाते।"

तो दुनिया ने देखा कि किरदार-साज़ी के लिये हुसैन से बढ़ कर कोई दूसरी मिसाल नहीं। आज ज़रूरत इस बात की है कि यादे हुसैन मनाई जाये और कुछ इस तरह से मनायी जाये कि किरदारे हुसैन की किरनें हमारी रूह में समा जायें।

आज हम देखते हैं कि मुल्क आपस में पानी के बटवारे के लिए लड़ रहे हैं, मुल्क तो बहुत दूर की चीज़ एक ही मुल्क के सूबे पानी के लिए आपस में लड़ रहे हैं, सूबे तो बहुत दूर की चीज़ पड़ोसी आपस में पानी के लिए लड़ रहे हैं। वही करबला में हुसैन अपने जानी दुश्मनों को, जो उन्हें घेर कर करबला ले जा रहे हैं, वह पानी पिला रहें हैं जो सहरा की तपती धूप में बच्चों के लिए जमा किया गया था और यह दिखा रहे हैं कि पानी किसी की मिलकियत नहीं, उस पर सब का बराबर से हक़ है। अगर किरदारे हुसैनी पर अमल हो रहा होता तो कम से कम पानी पर आपस में लड़ाइयाँ न होतीं।

किरदारे हुसैन वह अज़ीम समन्दर है जो 7 मिनट तो बहुत दूर, 7 सौ साल की मुसलसल तक़रीर की गगरी में भी नहीं समा सकता। आज ज़रूरत इस बात की है के हुसैन से बामारफ़त महुब्बत की जाये, क्योंकि जिस शै से मुहब्बत होती है उसकी याद बार-बार आती है। जब हुसैन की याद बार-बार आयेगी तो उनके किरदार के नक़्श हमारे ज़हनों पर छा जायेगें और उनका किरदार हमारे लिए नमून-ए-अमल बन जायेगा। बक़ौल "जोश" मलिहाबादी के -

"दुश्मनों की प्यास बुझवाओ तो लो नाम हुसैन।
मौत की छाती पा चढ़ जाओ, तो लो नाम हुसैन।
दोस्त दारे दुश्मनाँ हो लो , तो लो नाम हुसैन।
तेग़ के नीचे भी सच बोलो, तो लो नाम हुसैन।
जुल्म की तामीर को ढा दो, तो लो नाम हुसैन।
शम्मा से आंधी को चकरा दो, तो लो नाम हुसैन।
हां परख लो खूब हिम्मत को, तो लो नाम हुसैन।
जांच लो अपनी शराफ़त को, तो लो नाम हुसैन।"

दुश्मनों के साथ कैसा सुलूक किया जाता है, यह हुसैन से सीखो। गुलामों और कनीज़ो के साथ कैसे पेश आया जाता हैं, यह हुसैन से सीखो। राहे हक़ के लिए अपना सब कुछ कैसे लुटा दिया जाता है, यह हुसैन से सीखो। यतीमों और बेवाओं के सिर पर कैसे हाथ रखा जाता हैं यह हुसैन से सीखो। हर बड़ी से बड़ी मुसीबत का कैसे हंस के सामना किया जाता है यह हुसैन से सीखो। अपने गोद के पालों को प्यास में बिलखता देखकर भी कैसे सब्र किया जाता है, यह हुसैन से सीखो। सब कुछ निछावर करके मर्ज़िये इलाही जानना, यह हुसैन से सीखो। दुश्मनों की इशतियाल अंगेज़ हरकतों के बावजूद भी जंग में पहल न करना, यह हुसैन से सीखो। ज़ुल्म न करने और ज़ुल्म न सहने की आदत डालना, यह हुसैन से सीखो। बड़े से बड़े इम्तहान में भी हक़ को न छोड़ना, यह हुसैन से सीखो। यादे हुसैन क्यों ज़रूरी है ? क्योंकि, जब हुसैन का नाम ज़हन में आयेगा तो किरदारे हुसैन ज़हन में आयेगा और जब किरदारे हुसैन ज़हन में आयेगा तो किरदारे यज़ीद सामने आयेगा। जब किरदारे हुसैन से बामारफ़त मुहब्बत होगी तो किरदारे यज़ीद से बामारफ़त नफ़रत होगी। बस तभी, इन्सान के किरदार से बुराइयां दूर हो जायेंगी। क्यों कि किरदारे यज़ीद दुनिया की तमाम बुराइयों का एक पुलिन्दा है।

बामारफ़त यादे हुसैन से मुन्सलिक होने का असर आज की दुनिया में देखना हो तो देखिए, कि किस तरह या हुसैन कहकर किरदारे हुसैनी पर अमल करने वाला ईरान, बातिल परस्त ज़ालिम और यज़ीदी हुकूमतों और शैतानी Superpowers से टकराया हुआ है। न रूस से मदद लेता, न अमरीका से मदद लेता। क्यों ? क्योंकि हुसैन ने अपने वक्त की दोनों Superpowers यानि यज़ीदी हुकूमत और रूमी हुकूमत को ठोकर मार दी थी और या हुसैन को बिद्अत कहने वाली बदकार अरबी हुकूमतें किस तरह फिलिस्तिनियों को अकेला छोड़कर इसराईल के सामने से फ़रार अख्तयार किये हुए हैं।

अगर बातिल को कुचलना है, हक़ की राह पर चलना है, मुसीबतों के वक्त में भी हिम्मत और सब्र का दामन नहीं छोड़ना है या यूँ कहूँ, कि दुनिया को जन्नत बनाना है तो सरदारे जवाँनाने जन्नत इमामे हुसैन की याद को ताज़ा करके उनके किरदार के नक्श पर अमल करना पड़ेगा, वरना किरदार की पस्ती की यह सूरत और भी बद्तरीन होती जायेगी और दुनिया जहन्नुम से भी बद्तर हो जायेगी।

दावत है तमाम बनीनौए-इन्सानी को चाहे वह इस वक्त भी बातिल के साथ क्यों न हो, के आजाओ और इमामे हुसैन अ० से बामारफ़त मुहब्बत करके उनकी याद मनाकर उनके किरदार को नमून-ए-अमल बनाकर अपनी ज़िन्दगी संवार लो और हुर बन जाओ।

पेज नं0 29 का शेष...................

जंग पर जाते वक्त अगर अपनी मां–जाई बहन ज़ैनब से रूखसत हुये तो माँ की कनीज़ फिज़्ज़ा को आखरी सलाम किया। यह है अख्लाक़ की वह बलन्दी जो किरदारे हुसैन से मिल रही है।

करबला के समुन्दर में किरदार की ऐसी लातादाद मौजे हैं लेकिन हुसैन के किरदार ने जिस अज़ीम शैय का इन्केशाफ़ किया वह यह थी कि ऐ बनी–नौ–ए–इंसान तुम्हारा वजूद कभी फ़ना होने वाला नहीं ! अगर तुम्हारा किरदार क़ानूने इलाही की पैरवी और बातिलाना इकदाम के ख़िलाफ आवाज़ बलन्द कर देने वाले हौसले रखता है तो तुम हमेशा हमेशा की हयात के हक़दार होगे। वरना मौत तुम्हारी ज़िन्दगी का दूसरा नाम है जिससे तुम कभी छुटकारा न पा सकोगे।

इसी लिये किरदार का वह चशमा जो करबला की खुश्क और रेतीली सरज़मीन पर बहा था, दुनियाये इन्सानियत के लिये हयात बनकर छा गया जिसकी याद से हम आज भी सरशार हैं और अपने किरदार की तमाम बलन्दियों पर पहुंचते हैं।